कृषि फसलों एवं औषधीय पौधों की जैविक खेती विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पर रिपोर्ट

Report on one day training program on organic cultivation of agricultural crops and medicinal plants

भा॰वा॰अ॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), सांबा के सहयोग से सांबा जिले के किसानों के लिए "कृषि फसलों एवं औषधीय पौधों की जैविक खेती" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), सांबा में किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को जैविक खेती की उन्नत तकनीकों, औषधीय पौधों के वैज्ञानिक उत्पादन तथा सतत एवं पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों के बारे में जागरूक करना था, ताकि वे अपनी कृषि प्रणाली को अधिक लाभकारी और पर्यावरण के अनुकूल बना सकें। कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को यह भी बताया गया कि जैविक खेती न केवल मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने में सहायक होती है, बल्कि इससे उत्पादित कृषि एवं औषधीय फसलों की गुणवत्ता भी बेहतर होती है, जिससे बाजार में उनके उत्पादों को बेहतर मूल्य प्राप्त हो सकता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ, डॉ. संजय खजुरिया द्वारा मुख्य अतिथि डॉ. मनीष थपलियाल, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के स्वागत के साथ किया गया। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित सभी किसानों, वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों का स्वागत करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों को नई तकनीकों और आधुनिक कृषि पद्धतियों से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इसके पश्चात अन्य गणमान्य व्यक्तियों तथा संसाधन विशेषज्ञों (Resource Persons) का भी औपचारिक स्वागत डॉ. थपलियाल के द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक, डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को कृषि फसलों एवं औषधीय पौधों की जैविक खेती से संबंधित वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना है। उन्होंने अपने व्याख्यान में "शिवालिक क्षेत्र के महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का सतत दोहन विषय पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने किसानों को बताया कि शिवालिक क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण औषधीय पौधे प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं, जिनका अनियंत्रित दोहन उनके अस्तित्व के लिए खतरा बन सकता है। इसलिए इन पौधों का वैज्ञानिक एवं सतत तरीके से संग्रहण और संरक्षण अत्यंत आवश्यक है, ताकि इनकी उपलब्धता भविष्य में भी बनी रहे और स्थानीय समुदाय को इससे आर्थिक लाभ मिलता रहे।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. मनीषा थपलियाल, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने अपने संबोधन में संस्थान द्वारा किए जा रहे विभिन्न अनुसंधान एवं विकास कार्यों की जानकारी साझा

की। उन्होंने बताया कि संस्थान पर्वतीय एवं अर्ध-पर्वतीय क्षेत्रों में वन, पर्यावरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। उन्होंने जल स्रोतों के संरक्षण के महत्व पर विशेष बल देते हुए कहा कि कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए जल संसाधनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही उन्होंने किसानों को कृषि विविधीकरण अपनाने के लिए प्रेरित किया, जिससे किसान पारंपरिक फसलों के साथ-साथ औषधीय एवं बागवानी फसलों की खेती कर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। उन्होने कहा कि किसान इस कार्यक्रम के माध्यम से जैविक खेती, औषधीय पौधों के उत्पादन, सतत कृषि पद्धतियों तथा आधुनिक कृषि तकनीकों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त करेंगे, जो भविष्य में उनकी कृषि को अधिक लाभकारी और पर्यावरण-अनुकूल बनाने में सहायक सिद्ध होंगी।
डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक (अनुसंधान) ने कहा कि समग्र और संतुलित विकास के लिए भूमि का उचित एवं वैज्ञानिक उपयोग अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि कृषि भूमि में वृक्षारोपण को बढ़ावा देने से पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के साथ-साथ मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है तथा किसानों को अतिरिक्त आय के अवसर भी प्राप्त होते हैं। उन्होंने किसानों को ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया, प्राकृतिक खेती की अवधारणा तथा केंचुआ खाद (वर्मी कम्पोस्ट) के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने यह भी बताया कि यदि किसान अपनी जैविक उपज को प्रमाणित करवाते हैं, तो उन्हें बाजार में बेहतर कीमत मिल सकती है, जिससे उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है।

डॉ. संजय खजुरिया, प्रधान वैज्ञानिक, के वी के सांबा ने "कृषि फसलों के सतत उत्पादन के लिए जैविक खेती" विषय पर व्याख्यान देते हुए किसानों को बताया कि जैविक खेती अपनाने से मिट्टी की संरचना एवं उर्वरता लंबे समय तक बनी रहती है। उन्होंने किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त करने के लिए बागवानी फसलों के साथ-साथ अंतरफसल प्रणाली अपनाने की सलाह दी। उन्होंने विशेष रूप से कद्दू जैसी बेल वाली फसलों को बागवानी फसलों के बीच मध्यवर्ती फसल (इंटरक्रॉप) के रूप में उगाने की तकनीक के बारे में विस्तार से जानकारी दी, जिससे किसान सीमित भूमि में अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। डॉ. अश्वनी तपवाल, प्रभाग प्रमुख (विस्तार) ने अपने व्याख्यान में जैविक खेती में जैव उर्वरकों एवं जैव फफूंदनाशकों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि जैव उर्वरक पौधों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि जैविक खेती से उत्पादित औषधीय पौधों की गुणवत्ता बेहतर होती है, जिससे उनका औषधीय महत्व बढ़ जाता है। उन्होंने किसानों को जड़ी-बूटियों के वैज्ञानिक एवं सतत दोहन के महत्व के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। डॉ. शालिनी खजुरिया, विषय विशेषज्ञ ने किसानों को अंतरफसल के रूप में उगाई जाने वाली विभिन्न सब्जियों तथा उनकी उन्नत खेती तकनीकों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अंतरफसल प्रणाली अपनाने से भूमि का बेहतर उपयोग होता है और किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान डॉ॰ राजू गुप्ता, वरिष्ठ वज्ञानिक केवीके रामबन एवं डॉ. संजय खजुरिया ने किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से परिचित कराने के उद्देश्य से कृषि में ड्रोन के उपयोग का प्रदर्शन भी किया गया। इस दौरान किसानों को बताया गया कि ड्रोन तकनीक के माध्यम से फसलों में उर्वरकों एवं कीटनाशकों का छिड़काव अधिक सटीक, कम समय में तथा कम लागत पर किया जा सकता है। कार्यक्रम के अंत में किसानों के साथ एक संवाद सत्र आयोजित किया गया, जिसमें किसानों ने जैविक खेती,

औषधीय पौधों की खेती, विपणन तथा तकनीकी समस्याओं से संबंधित अपने प्रश्न पूछे। विशेषज्ञों ने उनके सभी प्रश्नों के समाधान प्रदान किए और उन्हें व्यावहारिक सुझाव भी दिए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जम्मू-कश्मीर के सांबा जिले के लगभग 50 किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन डॉ॰ जोगिंदर चौहान के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ ।

कार्यक्रम के छायाचित्र

KRISHI VIGYAN KENDRA SAMBA
WELCOME YOU

सांम्बा

शेर-ए-कश्मीर
कृषि विज्ञान एवं
जम्मू

शेर-ए-कश्मीर
कृषि विज्ञान एवं
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
विस्तार
जम्मू और कश्मीर

साम्बा
शेर-ए-कश्मीर
कृषि विज्ञान एवं
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
जम्मू
कृषि विज्ञान केंद्र
साम्बा

जम्मू
साम्बा

कृषि विज्ञान केन्द्र
TRAINING PROGRAMME

Media Coverage

सांबा में जैविक खेती व औषधीय पौधों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

#ImportantInformation नकली Food Products आपकी सेहत पर डालते है गहरा असर, फिर लगती है बीमारियां, अगर बीमारियों से बचना है तो आपको करने है ये...

कृषि विज्ञान केन्द्र
NATIONAL JAMMU
के बारे में जो है बताया जाएगा एग्रो
फॉरेस्ट्री और औषधीय
t drive in border districts of Raj
केन्द्र सरकार नै 2025 च आए दे ह्याईं, बद्दल फटने दे मगरा
13.03.26
19:10:09

****